ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-1*February- 2018
Innovation The Research Concept

नयी सदी की महिला आत्मकथा लेखन में कामकाजी महिलाओं की पारिवारिक स्थिति एवं सृजन

हेमलता मीना
शोध छात्रा,
हिन्दी विभाग,
राजकीय कला कन्या महाविद्यालय,
कोटा, राजस्थान

लीला मोदी
सह–आचार्य,
हिन्दी विभाग,
राजकीय कला कन्या महाविद्यालय,
कोटा, राजस्थान

प्रेमलता मीना
शोध छात्रा,
हिन्दी विभाग,
राजकीय कला कन्या महाविद्यालय,
कोटा, राजस्थान

सारांश

नारी की समाज में स्थिति उसकी यथार्थवादिता के दृष्टिकोण को उजागर करती है तथा समाज की वास्तविक स्थिति का दर्पण होती है। जहाँ समाज में नारी की स्थिति दयनीय व सम्मानीय नहीं होती है, उस समाज का विकास व उन्नति भविष्य के लिए अवरूद्ध हो जाती है। वर्तमान समय में समाज में यदि नारी कामकाजी है तो भी पारिवारिक कार्य की समस्त जिम्मेदारियाँ तथा कर्तव्य उसी पर थोपे जाते है। पुरुष का कार्य केवल बच्चे पैदा करना तथा नारी की देह का शोषण करना मात्र रह गया है। परन्तु आज की नारी भी पारिवारिक कार्यों में अपनी रुचि कम ही प्रदर्शित कर रही है। वह शादी जैसे बंधन से मुक्त होकर स्वतंत्र जीवन जीने की लालसा करने लगी है, मैत्रेयी पुष्पा द्वारा लिखित कस्तूरी कुडंल बसै, प्रभा खेतान कृत "अन्या से अनन्या", मन्नू भंडारी कृत "एक कहानी यह भी" जैसी आत्मकथाओं ने समाज में नये आयाम, क्रांति व दिशा प्रदान की है। जिससे एक नारी अपने आत्मसम्मान एवं अधिकारों की रक्षा कर सकें तथा अपना सुनहरा जीवन सुख व खुशी के साथ जी सकें अर्थात् उसे मानवीय जीवन की वह सुखद व स्वतन्त्र अनुभूति प्राप्त हो जो ईश्वर द्वारा उसे प्रदत्त की गई है।

मुख्य शब्द : कस्तूरी कुडंल बसै, अन्या से अनन्या, एक कहानी यह भी, आत्मकथाओं, पारिवारिक, आत्मसम्मान

प्रस्तावना

नारी की समाज में स्थिति उसकी यथार्थवादिता के दृष्टिकोण को उजागर करती है तथा समाज की वास्तविक स्थिति का दर्पण होती है। जहाँ समाज में नारी की स्थिति दयनीय व सम्माननीय नहीं होती है, उस समाज का विकास व उन्नति भविष्य के लिए अवरूद्ध हो जाती है। माँ को प्रथम गुरु की संज्ञा इसलिए प्रदान की गई है कि वह संस्कारों की जननी होती है जो अपने प्रेम व वात्सल्य से नवीन गुणों का संचार करती है, जो लहू बनकर एक पुरूष के अन्दर दौड़ता है। नारी का रूप व सौन्दर्य स्वमेय ही ईश्वरीय सृजन है जिसे एक माँ की अनुभूति से सृजित किया गया है। इस संसार में जीवन का आरम्भ एक स्त्री या नारी द्वारा ही सम्भव है तथा उसमें व्याप्त गुणों के कारण मातृत्व, भ्रातत्व, समर्पण, त्याग आदि से ही उसका स्वभाव व व्यवहार शुद्ध बनता है। वह त्याग व करूणा की प्रतिमूर्ति होती है जिसके कारण ही वह एक परिवार की सुखद आधारशिला होती है जो परिवार की नींव को मजबूत तो बनाती ही है परिवार को सम्बन्धों में बाँधकर भी रखती है। उसका स्नेह व प्रेम ही उसमें बच्चों के लिए सृजनात्मकता उत्पन्न करती है।

एक नारी द्वारा परिवार के सदस्यों के विभिन्न कार्य करना, विभिन्न प्रकार के व्यंजन व भोजन तैयार करना, पर्व व त्योहारों पर सजना–संवरना, श्रृंगार करना, घर–परिवार की दिनचर्या को सही प्रकार से व्यवस्थित रखना सृजनात्मकता का ही अंग है जो एक नारी में स्वतः ही होती है। उसकी कल्पनाशीलता, ह्रदय से आभास, आत्मानुभूति आदि के कारण ही उसकी विचारशीलता मन की अच्छाईयों से निकलती है।

एक नारी पूर्ण समर्पण से अपने कर्त्तव्यों व दायित्वों का निर्वाह करती है। अतः जब नारी के मन को ठेस पहुँचती है तो मन की भावनाएं स्वतः ही लेखन का रूप धारण कर लेती है। जो कविता, गीत, गजल, लेख आदि के रूप में परिणित होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

एक नारी के मन को आघात पहुँचता है या मन आहत होता है उसके मन में ठेस पहुँचती है या उनकी भावनाओं के साथ खेला जाता है तो उसका

मन विचलित हो उठता है तथा मन की गहराईयों में दबा हुआ अहसास प्रेरणा शक्ति व स्त्रोत के रूप में संचित होकर लेखन के रूप में आकार ग्रहण करने लगता है तथा दुःख–दर्द, पीड़ा, तिरस्कार, घृणा आदि की वास्तविक अभिवृत्ति होने लगती है।

नयी सदी के प्रारम्भ में महिला आत्मकथा का प्रचलन केवल वास्तविक परिस्थितियों का सामना करते हुए तथा अपना खोया मान–सम्मान प्राप्त करने के लिए तथा उन परिस्थितियों से उन महिलाओं को प्रोत्साहन व प्रेरणा प्रदान करना जिससे ऐसी महिला ऐसी परिस्थितियों व समस्याओं का सामना कर सकें तथा जागरूक होकर अपना संघर्ष पूर्ण कर अपनी स्वतंत्रता व आत्मसम्मान प्राप्त कर सकें। उन नारियों द्वारा लिखा गया जिन्होंने अपने जीवन में संघर्ष किया तथा मान–सम्मान, प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष करते हुए समाज में एक पद व प्रतिष्ठा प्राप्त की।

शोध प्रविधि एवं कार्य योजना

शोध कार्य का उद्देश्य नयी सदी की महिला आत्मकथाकारों के साहित्य का साहित्यिक मूल्यों, सैद्धान्तिक मान्यताओं, वास्तविक आयामों एवं युग चेतना के संदर्भ में सांगोपांग विवेचन एवं विश्लेषण किये जाने का है तथा साथ ही आधुनिक काल से लेकर अब तक हिन्दी आत्मकथा साहित्य की यात्रा एवं लेखिकाओं पर उनके प्रभावों की समीक्षा करना भी है। अतः सर्वेक्षण एवं तुलनात्मक पद्धतियों की सहायता से मुख्यतःआलोचनात्मक पद्धति से लेखिकाओं की आत्मकथाओं के साहित्यिक मूल्यों, उनमें निहित उनकी सैद्धान्तिक मान्यताओं उनके विविध तथ्यात्मक आयामों तथा उनकी कथाकृतियों का समसामयिक संदर्भों में लोक चेतना के दृष्टिकोण से एक समग्र विवेचन एवं विश्लेषण किया जायेगा।

परिणाम एवं विचार–विमर्श

'मेरी कहानी' मे मेरी कॉम जब मातृत्व का सुख प्राप्त करती है तो वह अपनी खेल की दुनिया को भुला बैठती है क्योंकि बच्चों की परवरिश उनके लिए महत्वपूर्ण होती है। जब बच्चे बड़े होते है तो वह खेल के स्थान पर उन्हें ले जाने लगती है साथ ही अपना अभ्यास प्रारम्भ करती है परन्तु उन्हें बच्चों की देखभाल करने, उनका लालन–पालन करने में बहुत कठिनाई महसूस होती है। उनकी स्थिति से यह ज्ञात होता है कि एक मां व बच्चों के साथ कामकाज की जिम्मेदारी निभाना, दोहरी जिन्दगी जीने के समान है।

अतः आप एक के साथ इन्साफ करते हो तो दूसरे के साथ कुछ अन्याय तो हो ही जाता है। दोनों में तालमेल बैठाना बहुत कठिन होता है।

ऐसे समय में एक स्त्री की सृजनशीलता पूर्णतः मातृत्व व वात्सल्य में परिवर्तित होती दिखाई देती है जो अपनी प्राथमिकता बनाये रखती है तथा एक स्त्री की सृजनशीलता को कम कर देती है।

'कस्तूरी कुंडल बसै' में अपनी बच्ची के भविष्य व उसकी शिक्षा के लिए कस्तूरी सारे सुखों का त्याग कर देती है। लेखिका विवाह के बाद अपने पारिवारिक जीवन में उलझ गई कि उसे अपने पढ़े–लिखे होने का अहसास नहीं रहा। वह धन की सभी मर्यादाओं का पालन करती है। मैत्रेयी पुष्पा ने वैवाहिक जीवन के सीमित दायरे में जीना पसंद किया। वह यह मानती है कि लड़की पढ़–लिखकर कितने ही ऊँचे ओहदे पर काम करती हो लेकिन परिवार उससे छूटता नहीं। घर के सभी काम उसे ही करने पड़ते है।

'एक कहानी यह भी' में मन्नू भंडारी बताती है कि पति पारिवारिक कार्यो में किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं देते थे। लेखिका के पास नौकरी के कई ऑफर आये परन्तु पति हमेंशा उसे टालते रहे। पारिवारिक जिम्मेदारी का उन्हें कोई अहसास तक नहीं था।

'अन्या से अनन्या' में जब प्रभा जी आर्थिक रुप से सक्षम होने लगती तो कई बार डॉ. सर्राफ उनकी भावनाओं से खेल कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारते है। आर्थिक स्थिति के कारण ही उन्हें सम्मान की प्राप्ति होती है।

वर्तमान समय में समाज में यदि नारी कामकाजी है तो भी पारिवारिक कार्यों की समस्त जिम्मेदारियाँ तथा कर्तव्य उसी पर थोपे जाते है। पुरुष का कार्य केवल बच्चे पैदा करना तथा नारी की देह का शोषण करना मात्र रह गया है परन्तु आज की नारी भी पारिवारिक कार्यों में अपनी रुचि कम ही प्रदर्शित कर रही है। वह शादी जैसे बंधन से मुक्त होकर स्वतंत्र जीवन जीने की लालसा करने लगी है। अतः वर्तमान समय में पति–पत्नी तथा परिवार के रिश्तों में विश्वास व आत्मीयता नहीं रह पा रही है।

आर्थिक स्वातन्त्र्य के विकास के साथ महिलाओं का परिवार में बनता केन्द्रीय स्थान

''कस्तूरी कुण्डल बसै'' में कस्तूरी अपनी बेटी के ब्याह की रस्में स्वयं ही कराती है तथा समाज द्वारा किये जाने वाले विरोध को भी दबाती है। वह किसी के भी सामने झुकती नहीं तथा अपनी बेटी की शादी बिना दहेज के करके समाज में एक नई सोच की स्थापना करती है।

''एक कहानी यह भी'' में मन्नू भंडारी अपनी साहित्यिक प्रतिभा व लेखनी से स्वयं ही आत्मनिर्भर बनती है तथा अपने जीवन के उद्देश्यों व लक्ष्यों की प्राप्ति वह स्वयं करती हुई पारिवारिक उत्तरदायित्व निभाती है।

''अन्या से अनन्या'' में प्रभा खेतान व्यवसाय कर पुरुष व्यवसाय के समक्ष चुनौती बनकर सम्मान व पद की प्राप्ति करती है तथा प्रेमिका के ही परिवार को अपना मानकर उनकी आर्थिक सहायता भी करती है।

''मेरी कहानी'' में मेरी कॉम जब आर्थिक रुप से सक्षम होने लगती है तो अपने पूरे परिवार की आर्थिक तथा सामाजिक परिवेश को परिवर्तित करने की कोशिश कर सभी को शिक्षित व आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश करती है।

उपरोक्त आत्मकथाओं में पारिवारिक स्थिति में नारी का स्थान महत्वपूर्ण तथा केन्द्रीय भूमिका का निर्वाह करता है क्योंकि वही आर्थिक रुप से सक्षम होती है तथा पुरुष का पारिवारिक उत्तरदायित्वों से दूरी, परिवार में महिला की भागीदारी को बढ़ा देती है।

वर्तमान समय में स्त्री पुरुष दोनों समानता ....
.......परिवार का भरण पोषण करने की कोशिशे कर ....
...............वर्तमान सामाजिक व्यवस्था तथा भौतिकवादिता......

....................महत्वाकांक्षाओ में फसता जा रहा है तथा नारी की स्थिति इसी प्रकार की होती जा रही है, उसे धन, वैभव, यश की कामना है परन्तु पुरुष प्रधान नारी को प्रयोग करते हुए उच्च पदों पर आसीन कर रहा है। वह उसका उपभोग करते हुए उसे समानता के छलावे में ढ़ाल देता है परन्तु वर्तमान समय में स्त्रियों को रोजगार के अधिक अवसर उनकी देह के रुप में प्राप्त हो रहे है। जिससे स्त्रियों की आर्थिक स्थिति में बहुत ही बदलाव आ गया है तथा शिक्षा के बदलते आयाम व तकनीकों ने उसकी स्वतन्त्रता के क्षेत्र को बढ़ा दिया है जिससे परिवारों में भी उसका पद सम्मान बढ़ने लगा है। परिवार के निर्णयों में उसकी भी भूमिका प्रधान रुप से होने लगी है।

निष्कर्ष

नयी सदीं की महिला आत्मकथाओं की आर्थिक स्थिति में बहुत परिवर्तन आ गया इसका कारण अभिव्यक्ति से अधिक साधनों की उपयोगिता तथा तकनीकों के माध्यम से अभिव्यक्ति की कुछ क्षणों से सम्पूर्ण संसार में प्रचार व प्रसारण के कारण लेखन की सीमा व क्षेत्र विस्तृत हो चुके हैं।

वर्तमान समय में नारी पर होने वाले अत्याचार, अपमान की अभिव्यक्ति तुरन्त ही संचार माध्यमों से समाज के समक्ष आ जाती है। इसी प्रकार से संचार तकनीकों ने कई आधार प्रस्तुत किये है जिनके माध्यम से नारी बिना नाम व पहचान के भी अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दे सकती है।

समाज में बढ़ता शारीरिक आकर्षण जिसे प्रेम समझा जाता है जब कल्पना से बाहर आकर वास्तविक धरातल पर आता है तो सच्चाई समझ में आती है संचार साधनों ने एक ओर जहाँ हमें स्वतन्त्रता प्रदान की है वहीं रिश्तों मे अजीब सा खिंचाव, तनाव, कुण्ठा, भय, डर रिश्तों से दूरी भी रहीं है।

समाचार पत्रों में दिन–रात होने वाली घृणित घटनाएं, अत्याचार, दुःख इस बात को स्पष्ट करते है कि मनुष्य जीवन में शांति व सुख की कल्पना ही कर सकता हैं उसे प्राप्त करना बहुत ही कठिन है ।

रोजगार तथा बढ़ती महत्वाकांक्षाएं जीवन को अन्धकार की ओर ले जा रही है। महिलाएं आर्थिक रुप से सक्षम होने के कारण परिवारों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह भी करने लगी है। परन्तु रिश्तों में विश्वास, मूल्य, संस्कार नहीं रहे हैं मैत्रेयी पुष्पा द्वारा लिखित कस्तूरी कुडंल बसै, प्रभा खेतान कृत "अन्या से अनन्या", मन्नू भंडारी कृत "एक कहानी यह भी" जैसी आत्मकथाओं ने समाज में नये आयाम, क्रांति व दिशा प्रदान की है। जिससे एक नारी अपने आत्मसम्मान एवं अधिकारों की रक्षा कर सकें तथा अपना सुनहरा जीवन सुख व खुशी के साथ जी सकें अर्थात् उसे मानवीय जीवन की वह सुखद व स्वतंत्र अनुभूति प्राप्त हो जो ईश्वर द्वारा उसे प्रदत्त की गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *मन्नू भण्डारी, (2007) एक कहानी यह भी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।*
2. *मैत्रेयी पुष्पा, (2009) कस्तूरी कुण्डल बसै, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली।*
3. *प्रभा खेतान,(2011) अन्या से अनन्या, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली।*
4. *डॉ. रघुनाथगणपति देसाई,(2012) महिला आत्मकथा लेखन में नारी, ए.बी.एस. पब्लिकेशन, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।*
5. *एम. सी. मेरी कॉम,(2014) मेरी कहानी, मन्जूल पब्लिसिग हाउस, नई दिल्ली।*